प्रथम अध्याय

"गोविन्द मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

प्रथम अध्याय

''गोविंद मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

- ❑ प्रास्ताविक

1.1 व्यक्तित्व

- 1.1.1 माता-पिता
- 1.1.2 जन्म
- 1.1.3 शिक्षा
- 1.1.4 भाई-बहन
- 1.1.5 जाती, वंश और पूर्वज
- 1.1.6 व्यवसाय
- 1.1.7 साहित्य के प्रति आस्था और प्रथम लेखन्
- 1.1.8 नौकरी
- 1.1.9 वैवाहिक जीवन
- 1.1.10 साहित्यकारों से संपर्क

1.2 कृतित्व

- 1.2.1 उपन्यास
- 1.2.2 कहानी संग्रह
- 1.2.3 यात्रा वृत्तांत
- 1.2.4 साहित्यिक निबंध
- 1.2.5 बालसाहित्य
- 1.2.6 कविता
- 1.2.7 अनुवाद
- 1.2.8 अन्य
- 1.2.9 गोविंद मिश्र पर आलोचनात्मक पुस्तकें
- 1.2.10 पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

प्रथम अध्याय

"गोविंद मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

❑ प्रास्ताविक -

मिश्र जी से पत्रव्यवहार करने के बाद और उनके व्यक्तित्व को जानने का और उनके व्यक्तिगत जीवन में झाँकने का मौका मिला। मिश्र जी अत्यंत सरल, सीधे स्वभाव के और सच्चे मन के व्यक्ति हैं। सहृदय होने के साथ-साथ बुद्धिवादी और व्यावहारिक भी दिखायी देते हैं। जीवन में अपनी इच्छानुसार अगर कुछ नहीं हुआ तो भी जीवन में बहुत सी जिम्मेदारियाँ आती हैं जिनके लिए मनुष्य को कर्तव्य निभाने के लिए व्यावहारिक बनना पड़ता है। मोहभंग के कारण जीवन में कमियाँ तो रहती हैं फिर भी जीना तो पड़ता ही है। जीवन जीने के लिए उनके अंदर के साहित्यकार ने उन्हें सहारा दिया है। उस साहित्यकार लेखक से ही वे हर बार सँभाले हैं और जीवन जी पाये हैं और ढेर सारी साहित्यकृतियों का निर्माण कर पाये हैं।

1.1 व्यक्तित्व -

साहित्यकार की साहित्य कृति को पढ़ने के बाद और उनके लेखन कौशल तथा उसकी प्रतिभा को जानने के बाद मन में एक जिज्ञासा पैदा होती है। जिस तरह की साहित्य कृतियों का निर्माण मिश्र जी के हाथों हुआ है क्या उसका संबंध कहीं उनके जीवन से, उनके जन्म स्थल से, परिवार से, संस्कारों से तो नहीं है? यह जानने के लिए साहित्यकार के व्यक्तित्व और कृतित्व को देखना आवश्यक बन जाता है।

मिश्र जी के विचारों को सुनने और उनके लेखन को जानने पर मैं अत्यंत प्रभावित हुई। जीवन की गुत्थियों को सुलझाने का एक जरिया है लिखना। मन के अंदर के स्पंदन जब बड़ी उत्साह के साथ उमड़ आते हैं तो उन्हें कागज पर उतारना जरूरी होता है।

1.1.1 माता-पिता :

गोविंद मिश्र जी की माता का नाम श्रीमती सुमित्रादेवी मिश्र था और पिता का नाम माधव प्रसाद मिश्र था। मिश्र जी का परिवार अत्यंत दारूण अवस्था में जीनेवाला परिवार था।

1.1.2 **जन्म :**

मिश्र जी का जन्म 1 अगस्त 1939 को अंतर्रा (बांदा) उत्तर प्रदेश में हुआ। वे ब्राह्मण जाती में जन्मे थे। ''अंतर्रा बांदा जिला उ.प्र. की एक तहसील थी। बहुत ही पिछड़ा इलाका। धान, धूल, धौंस धक्का के लिए प्रसिद्ध। अख्खड़पन और कर्कशता के लिए कुविख्यात।''[1]

1.1.3 **शिक्षा :**

गोविंद मिश्र जी की माता सुमित्रादेवी लोअर मिड़िल पास थी। पिता माधव प्रसाद मिश्र अयोध्या में संस्कृत के विद्यार्थी रहे थे, वही मंदिर में पूजा करते थे। मिश्र जी के परिवार में उनके जन्म से ही शिक्षा का माहौल था। शिक्षा के प्रति वे एकदम से अनभिज्ञ नहीं थें। माता-पिता की शिक्षा का असर मिश्र जी पर रहा।

साहित्यकार की साहित्यिक कृतियों को पढ़ने के बाद मन में एक तरह की जिज्ञासा निर्माण होती है। इतनी सुंदर साहित्यकृतियों का निर्माण करनेवाले इस लेखक ने यह शिक्षा कहाँ से ली है ऐसा प्रश्न मन में उठता है। हाइस्कूल, कालेज में ली हुई शिक्षा से भी बढ़कर, परिवार और समाज से मिली शिक्षा अक्सर साहित्यकारों को साहित्यकृतियों का निर्माण करने में उपयोगी होती है। मिश्र जी के पास इस तरह की सारी बातों का जैसे भंडार था। वे सभी तरह की शिक्षा से वाकिब थें। उनकी शिक्षा की जानकारी इस प्रकार है -

प्रारंभिक शिक्षा -

1) मिश्र जी की आठवीं दर्जे तक की शिक्षा चरखारी के गंगासिंह हाईस्कूल में हुई।
2) 9वी कक्षा से 12वी तक की शिक्षा उन्होंने बांदा के डी.ए.वी. स्कूल में ली।
3) कनिष्ठ महाविद्यालयीन शिक्षा उन्होंने बांदा से की। हाईस्कुल और इंटर दोनों में वह अपने जिले में प्रथम रहे हैं।

महाविद्यालयीन शिक्षा -

4) उच्च महाविद्यालयीन शिक्षा के लिए उन्हें इलाहाबाद जाना पड़ा। सर सुन्दरलाल होस्टल में रहकर 1955 से 1958 तक के दौरान उन्होंने बी.ए. और एम.ए. पास किया। बी.ए. में उनके अँग्रेजी साहित्य, मध्यकालीन इतिहास और संस्कृति आदि विषय थें। अँग्रेजी साहित्य में उन्होंने एम्.ए. किया।

एम्.ए. में मेरीट लिस्ट में चौथा स्थान मिला और जिस वर्ष पास हुए उसी वर्ष तथा 1959 में सेन्ट एंड्रूज कालेज, गोरखपुर में प्राध्यापक के पद पर आसिन हुए। गोरखपुर में रहते हुए आइ.ए.एस.की परीक्षा की तैयारी में लगे रहें।

5) "1960 में वे आई.ए.एस. परीक्षा में बैठे और इसी वर्ष चुन लिए गए।"[2] पहले ही प्रयास में उन्होंने सफलता हासिल की।

मिश्र जी हाईस्कूल से लेकर महाविद्यालयीन तथा विश्वविद्यालय की शिक्षा के बाद आई.ए.एस. तक की शिक्षा की सिढ़ियाँ बिना रूके चढ़ते गए और कामयाबी को जैसे उन्होंने अपने बस में कर लिया था। सफलता की श्रृंखला ने उन्हें जीवन के अत्युच्च शिखर तक पहुँचा दिया।

साहित्यकार की साहित्यकृतियों की ओर देखने से यह ज्ञात होता है कि मौलिक साहित्यकृति की निर्मिती करने का सारा श्रेय उनकी सुसंस्कृत शिक्षा की ही देन है।

1.1.4 भाई-बहन :

"मिश्र जी के परिवार में उनके सहित दो भाई-बहन थे।"

1.1.5 जाती, वंश और पूर्वज :

मिश्र जी के पूर्वज ब्राह्मण परिवार से थें। उनके पूर्वजों में दादा और नाना दोनों के साथ वे रह चुके हैं।

1) **दादा-दादी :** मिश्र जी के दादा दादी ब्राह्मण थें। उनके दादा का नाम नन्दराम था। वे पहले पहाड़ी थे। बाद में सिसोलर गाँव (जिला हमीरपुर उ.प्र.) में खेती करते थें। दादी का स्वर्गवास हुआ था।

2) **नाना-नानी :** मिश्र जी के नाना बांदा में बयाई का काम करते थे। नानी दूसरों के घरों में खाना बनाने का काम करती थी। इसलिए महाराजिन कहलाती थी।

1.1.6 व्यवसाय :

मिश्र जी की माता सुमित्रादेवी ने चरखारी रियासत स्कूल से अपने अध्यापन की शुरूआत की। उस समय स्त्रियों का नौकरी करना समाज में बुरा समझा जाता था।

अंतर्रा बहुत ही पिछड़ा इलाका था और उस जमाने में सुमित्रादेवी अकेली महिला थीं जो नौकरी करती थी।

रियासतें खत्म होने के बाद उनका तबादला चरखारी स्कूल से छिरका गाँव में हो गया था किंतु उनके अपने बच्चों को आगे बढ़ाने की सुविधा नहीं थी। इसलिए वहाँ की नौकरी छोड़कर वह अपने मायके में - बांदा में आ गयी। बांदा में आकर उन्होंने प्राइवेट स्कूल में अध्यापन करना शुरू किया।

मिश्र जी के पिता माधव प्रसाद मिश्र संस्कृत के विद्यार्थी थे। ''काम करने लायक उनके पास कोई शिक्षा नहीं थी। इसलिए वह जो भी काम सामने आता वही करते। वह मंदिर में पूजा का काम करते थे और मंगौड़ो की दुकान चलाते थें।''[3]

इस प्रकार मिश्र जी की माता उस जमाने में भी अध्यापिका रही है और पिता व्यावसायिक।

उस वक्त का जमाना ही ऐसा था कि घर परिवार में सदस्यों की संख्या अधिक होने से दारूण स्थिति में जीवन जीना पड़ता था। अनाज के लिए तरसना पड़ता था।

1.1.7 साहित्य के प्रति आस्था और प्रथम लेखन :

हर वह साहित्यकार जो कि अधिक संवेदनशील होता है, उनके बारे में आज तक यह देखा गया है कि, जीवन में गहरी चोट पहुँचानी वाली बात, मन में होने वाली घुटन, जीवन में आए हुअे अनुभवों के कारण मन में होनेवाली बेचैनी को मुक्त करने का आसान साधन है लिखना। दिल टूटने से मन में जो पीड़ा होती है उस पीड़ा का समाधान ढुँढ़ना ही लिखना है। बहुत से साहित्यकार ऐसे है जो जीवन में धोखा खा चुके हैं। या कोई-न-कोई बात उनके मन को सदमे की तरह लगी है और उसके बाद उनका मन और भी अधिक संवेदनशील और अस्त-व्यस्त हो गया है। तब आवश्यकता होती है उसे पूरी तरह से मुक्त करने की! मन की विड़ंबना को मुक्त करना ही साहित्य को जन्म देना है। साहित्यकार उस विशेष स्थिति में रहकर, मन ही मन रंगकर अत्यंत सुंदर, मन को छू लेने वाली साहित्यकृति का निर्माण करता है।

साहित्य का नवनिर्माण यह साहित्यकार की विशेष स्थिति का ब्यौरा होता है। वे कहते हैं, ''हर रचना के बाद मैं बिल्कुल वही नहीं रहता जो उस रचना के पहले था। भीतर कुछ हो चुका होता है इस बीच। एक रचना आगे आनेवाली कई रचनाओं की भूमिका बनती है। लिखने से ही लिखते रहने का क्रम बन जाता है।''[4]

उनका मानना ऐसा है कि, ''जीवन अर्थपूर्ण लगता है तभी जब मैं लिख रहा होता हूँ, वर्ना कितना निरर्थक।''[5]

मिश्र जी को उनके जीवन में पहले प्रेम की असफलता और क्लास वन नौकरी के मोहभंग ने लिखवाया। साहित्य निर्माण सुरूचिपूर्ण करने के पीछे यही दो बाते हैं जो उनकी प्रेरणा बन जाती है। इस संबंध में वे कहते हैं, ''स्वयं को प्रकट करने के लिए भीतर इतना दबाव होता था। जीवन को, स्वयं को समझने के लिए, आसपास परिवेश और अपने समाज को समझना है। इसके लिए लिखना था।''[6] इस प्रकार मिश्र जी स्वयं इस बात को मानते हैं कि जीवन जीने के लिए साहित्य के प्रति आस्था रखना आवश्यकता बन गयी थी।

सबसे प्रथम मिश्र जी ने अपने 14 वर्ष की आयु में ही पहली कहानी लिखी। वह कहानी उन्होंने बांदा में लिखी थी और यही से उनके मन में साहित्य के प्रति आस्था निर्माण हुई।

1.1.8 **नौकरी :**

मिश्र जी ने 1969 में अँग्रेजी विषय लेकर एम्.ए. किया और उसी वर्ष सेन्ट एन्ड्रूज कालेज, गोरखपुर में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हो गए। जुलाई से मार्च तक गोरखपुर कालेज में रहे। उसके बाद अंतर्रा के डिग्री कालेज में हैड़ के पद पर कार्यरत रहें। गोरखपुर में नौकरी के अलावा आई.ए.एस. परीक्षा में लगे रहें।

प्रशासनिक सेवा -

''प्रशासनिक सेवा करने के बारे में कभी मन में किसी तरह की आवश्यकता या अनुराग नहीं था।''[7] उस समय इलाहाबाद के अधिकतर विदूयार्थी इन कम्पीटिशन के लिए बैठते थे। 1960 की परीक्षा में वे बैठे और पहले ही प्रयास में चुन लिए गए।

मिश्र जी अतिव्यस्त प्रशासनिक पदाधिकारी रहे हैं। ''उनकी प्रथम नियुक्ति धनबाद में हो गयी। नौकरी के लिए वे जिस क्षेत्र में गए वहाँ के अनुभवों का उन्होंने अपने पहले उपन्यास 'वह अपना चेहरा' और 'जिहाद' आदि कहानियों में व्यक्त किया है।''[8] मिश्र जी केंद्रिय अनुवाद ब्यूरो के निर्देशक भी रहे हैं।

1.1.9 वैवाहिक जीवन :

आम तौर पर ऐसा कहा जाता है कि, जो व्यक्ति प्रसिद्धि की चरम सीमा को पार कर जाता है उसके पीछे उनके पारिवारिक सदस्यों का योगदान रहता है और मेरा मानना ऐसा है कि जरूर उनकी पत्नी का इसके लिए योगदान रहा है। इतने बड़े पैमाने में साहित्य की निर्मिती यूं ही नहीं हो जाती। अपनी पत्नी का वे कही कोई जिक्र तो नहीं करते हैं किंतु वास्तविकता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। इस दृष्टि से उनके वैवाहिक जीवन को जानना जरूरी होता है।

''1959 की जून में टीकमगढ़ के प्रेमनारायण दुबे की दूसरी कन्या शकुंतला से मिश्र जी का विवाह हुआ।''[9] वैवाहिक जीवन में चार संतानों की प्राप्ति हुई जिनमें एक पुत्री छः माह में और एक पुत्र आठ साल की आयु में भगवान को प्यारे हो गए। इनका गोविंद मिश्र के मन पर विषादपूर्ण प्रभाव पड़ा। चरखारी का वातावरण 'लाल पीली जमीन' उपन्यास में पुत्री के देहांत का प्रकरण 'साजिश' कहानी में और पुत्र शोक 'वर्णांजलि' कहानी में प्रकट हुआ है।

इस प्रकार जीवन के ऐसे छोटे-बड़े प्रसंगों के कारण उनका जीवन विषादपूर्ण रहा और हर उस आनेवाली समस्या से वे लड़ते रहें। मन में उठनेवाले तुफानों को रोकने के लिए उन्हें लेखन का सहारा लेना पड़ा। जिसके बाद जीवन जीने के लिए वे फिरसे खड़े हो गए।

1.1.10 साहित्यकारों से संपर्क :

मिश्र जी का नौकरी के कारण अलग-अलग जगह पर स्थानांतरण होता था। 1960 में उनका दिल्ली में स्थानांतरण हुआ। उसी समय वे हिंदी के जाने-माने साहित्यकारों के संपर्क में आ गए। उसी समय उनका दिल्ली में अज्ञेय जी, जैनेंद्र जी और दिल्ली में रहनेवाले अन्य साहित्यकारों से परिचय हुआ। बिहार में श्री हंस कुमार तिवारी (कवि) और श्री फणीश्वर नाथ रेणू से संपर्क का सौभाग्य मिला।

"नौकरी के सिलसिले में वे जहाँ भी गए वहाँ बहुत से साहित्यकारों का साथ रहा। मिश्र जी उन साहित्यकारों के संपर्क में ज्यादा रहें जो किसी गुट या वाद के हिमायती नहीं थें। जैनेंद्र, अज्ञेय, रेणु, नागर जी, विष्णु प्रभाकर, निर्मल वर्मा, रवीन्द्रनाथ त्यागी, श्रीलाल शुक्ल, शरद जोशी, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, शैलेश मटियानी आदि।"[10]

साहित्यकारों के संपर्क में आने के कारण उन्हें एक तरह से साहित्य को बढ़ाने की प्रेरणा सी मिली। अपने साहित्य को उचित स्थान प्राप्त करने के लिए साहित्यकारों से स्थापित संपर्क उपयोगी सिद्ध हुआ और उनकी रचनाओं को प्रकाशित करना आसान हो गया। इसी तरह वे अधिक दृढ़ता से लिखते गए और आज भी लिख रहे हैं। साहित्य के प्रति उनकी रूची दिन-ब-दिन बढ़ती गयी और आज भी अपनी लेखन परंपरा से जुटे हुए हैं। मिश्र जी के साहित्य को पढ़ने से यह बात तो सामने आ ही जाती है कि जीवन की दर्दनाक स्थिति, अनुभवों और अंतर्मन की बातों को मिश्र जी ने न्याय दिया है। घोर वास्तविकता को साहित्य में उतारकर प्रेमचंद के साहित्य जैसा और एक अनोखा रूप मिश्र जी के साहित्य में प्रतीत होता है। जिनमें हर उस प्रश्न को लिया है जो समाज की सारी घटनाओं से संबंधित है।

1.2 **कृतित्व -**

मिश्र जी जाने माने साहित्यकार हैं। उन्होंने अपने जीवन काल में 14 वर्ष की आयु में अपनी सर्वप्रथम कहानी लिखी। इसी कहानी के साथ ही साहित्यजगत् में उनका आगमन हुआ है। साहित्य का निर्माण उन्होंने कहानी विधा से शुरू कर दिया। इसी उम्र में उन्होंने और दो कहानियाँ - 'पूर्णमासी का भोग', 'चंदनियां अरज करें' का निर्माण किया, जो कालेज की पत्रिका में छपी थीं।

मिश्र जी की लेखन यात्रा की शुरूआत यूं तो बचपन में ही हुअी थी। सन् 1965 में वह सक्रिय हुई। सन् 1965 में बालकृष्ण रवि द्वारा संपादित 'माध्यम' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिका में उनकी 'नए पुराने माँ बाप' प्रकाशित हुई। मिश्र जी लिखित प्रकाशित कहानी संग्रह इस प्रकार हैं ।

शैलेश मटियानी लिखित 'कहानी लिखने का सिद्धांत और गोविंद मिश्र की कहानियाँ' इस मौलिक विचारों में उन्होंने मिश्र जी की कहानी 'वरणांजली' इस कहानी को चकित करा देनेवाली कहानी ऐसा कहा है। इस बारे में उनका मानना ऐसा है - ''चकित इस अर्थ में भी कि यह एक तरह कहानी नहीं भी है और दूसरी तरह से भीतर तक कंपकंपा देनेवाली एक कहानी! इस कोटि की रचनाएँ किसी लेखक और उस विधा की क्षमता और संभावनाओं के क्षितिज बताने वाली होती हैं। इस तरह की रचनाओं में पानी को सतह पर ही नहीं, तल तक देखा जा सकता है। मिश्र जी का कहानी लेखन सिद्धांत की टेक की जगह संवेदना के सातत्य का उदाहरण है।''[11]

1.2.1 **उपन्यास :**

मिश्र जी ने कहानी विधा से साहित्य निर्माण की शुरूआत की और उपन्यास विधा के प्रति भी वह सजग रहे हैं। जीवन की वास्तविकता को और जीवन की विवंचनाओं को समग्रता से चित्रित करने के लिए उपन्यास जैसी विधाओं की आवश्यकता होती है। मिश्र जी ने अपने उपन्यासों में सभी तरह के विषयों को न्याय दिया है। मिश्र जी के उपन्यासों में सामाजिकता, यथार्थता, राजनीति, आर्थिकता, मनोवैज्ञानिकता, आँचलिकता आदि सभी तरह का वर्णन दिखायी देता है।

मिश्र जी प्रसिद्ध एवं संवेदनशील कहानीकार के साथ-साथ वास्तववादी उपन्यासकार भी हैं। उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य में अपनी जीवन की अनुभूति की विडंबना को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। साहित्यकार की व्यक्तिगत विशेषताएँ उसके साहित्य सृजन जगत् से ही संग्रहित करता है। 'पाँच आँगनों वाला घर' यह उपन्यास हिंदी उपन्यास साहित्य का एक अलग अंदाज से लिखा गया महाकाव्य जैसे स्वरूप को बतानेवाला, देखने में छोटा किंतु ऐतिहासिक उपन्यास है। पारिवारिक इतिहास को दोहराने वाला तीन पीढ़ियों का एकत्रित चित्रण है।

मिश्र जी के आज तक के प्रकाशित उपन्यास

1)	वह अपना चेहरा	1969
2)	उतरती हुई धूप	1971
3)	लाल पीली जमीन	1976

4)	हुजुर दरबार	1981
5)	तुम्हारी रोशनी में	1985
6)	धीर समीरे	1988
7)	पाँच आँगनों वाला घर	1995
8)	फूल ... इमारतें और बन्दर	नया उपन्यास

1.2.2 **कहानी संग्रह :**

अ.क्र.	कहानी संग्रह	प्रकाशक स्थल	प्रकाशन वर्ष
1)	नये पुराने माँ-बाप	इलाहाबाद	1970
2)	अन्त:पुर	दिल्ली	1976
3)	स्थितियाँ रेखांकित	वही	1977
4)	धाँसू	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली	1978
5)	धाँसू	वही	नया संस्करण
6)	रगड़ खाती आत्महत्याएँ	संभावना प्रकाशन, मेरठ	1979
7)	मेरी प्रिय कहानियाँ	राजपाल एंड सन्स,दिल्ली	1980
8)	खुद के खिलाफ	संभावना प्रकाशन	1980
9)	अपाहिज	विद्या प्रकाशन मंदिर	1981
10)	खाक इतिहास	राजपाल एंड सन्स,दिल्ली	1985
11)	पगला बाबा	नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, राधाकृष्ण प्रकाशन	1988
12)	हवाबाज	वही	1998
13)	अर्थ बोझल	भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित प्रमुख बीस कहानियों का संग्रह	
14)	निर्झरणी	दो खंडों में संपूर्ण कहानियों का संकलन	

मिश्र जी की 'फाँस' और 'गलत नंबर' यह कहानियाँ दूरदर्शन पर प्रस्तुत हुयी हैं। थिएटर ग्रुप अनामिका द्वारा कलकत्ता में पाँच कहानियाँ नाटक के रूप में प्रस्तुत हुयी हैं।

मिश्र जी ने कहानी विधा में सर्वसमावेशक कहानियों का चित्रण किया है जिसमें समाज के सभी वर्गों का चित्रण आ गया है। सामाजिकता के साथ-साथ राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिकता का भी चित्रण इनकी कहानियों में आ गया है। मिश्र जी अत्यंत सरल, सीधि और रोचक शैली में सहजता से लिखते जाते हैं। लिखते-लिखते यूं लिख जाते हैं जैसे स्वाति नक्षत्र में आकाश से गिरी समुंदर में टपकी बूँद और बूँद से बना मोती, जिसकी सफेदी और चाँद सा रूप देखते ही बनता है। मिश्र जी की कहानियों में चाँद और मोती की तरह साफसुथरापन है। बनावटी रूप कहीं भी नहीं। यह उनकी प्रतिभा का प्रकाश है।

1.2.3 **यात्रा वृत्तांत :**

मिश्र जी घुम्मकड़ स्वभाव के होने के कारण उन्होंने यात्रा का वर्णन भी लिखा है -

1)	धूंधभरी सूर्खी	1976
2)	दरख्तों के पार ... शाम	1982
3)	झूलती झड़ें	1990
4)	पत्तों के बीच	1997

1.2.4 **साहित्यिक निबंध :**

मिश्र जी ने कुछ निबंधों की भी रचना की है, जिसमें से प्रसिद्ध निबंध निम्न प्रकार हैं -

1) साहित्यिक संदर्भ
2) कथाभूमि
3) संवाद अनायास

1.2.5 **बाल साहित्य :**

मिश्र जी ने बालसाहित्य का भी निर्माण किया है किंतु दुर्भाग्य से बाल साहित्य पर 'कवि घर चोर' यह एक ही रचना वे लिख पाये हैं। यह रचना अत्यंत रोचक है।

1.2.6 कविता :

वैसे उपन्यास कहानी लिखनेवाले मिश्र जी कवि मन के हैं क्योंकि उनके लेखन में लय है, ताल है, नाद है, सौंदर्य है, गद्य की लिखावट में भी काव्यात्मकता नजर आती है। असल में उन्हें तो कवि ही होना चाहिए था। अब तक उनका 'ओ प्रकृति माँ' नामक एक ही कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है।

1.2.7 अनुवाद :

गोविंद मिश्र के उपन्यास 'तुम्हारी रोशनी में' और 'धीर समीरे' का अनुवाद गुजराथी भाषा में हुआ है। विभिन्न कहानियाँ देशी-विदेशी भाषाओं में, जैसे अँग्रेजी, बंगाली, पंजाबी, गुजराथी और खास करके कन्नड में अनुदित एवं प्रकाशित हुई हैं।

'अक्षरा' यह पत्रिका स्वयं गोविंद जी चलाते हैं। उनकी कई कहानियाँ दूरदर्शन पर प्रकाशित हुई हैं। विदेश के कई विश्वविद्यालयों में आपने अपने महान देश का प्रतिनिधित्व किया है।

1.2.8 अन्य :

1. 'मुझे घर ले चलो' इस किताब में मिश्र जी द्वारा लिखित सभी विधाओं में स्थित प्रतिनिधि रचनाओं का संकलन है।
2. 'लेखक की जमीन' यह लेखक के महत्त्वपूर्ण साक्षात्कारों का संकलन है।

1.2.9 गोविंद मिश्र पर आलोचनात्मक पुस्तकें :

मिश्र जी पर आज तक आलोचनात्मक पुस्तकें लिखी गयी हैं।

1. गोविंद मिश्र - सृजन के आयाम वाणी प्रकाशन
   संपादक डॉ. चन्द्रकांत बांदिवडेकर, दरियागंज, दिल्ली
2. गोविंद मिश्र का औपन्यासिक संसार दरियागंज, दिल्ली
   डॉ. चन्द्रकांत बांदिवडेकर
3. गोविंद मिश्र - लेखक की जमीन
4. सृजन यात्रा : गोविंद मिश्र
   सं. डॉ. उर्मिला शिरीष

1.2.10 पुरस्कार एवं सम्मान :

गोविंद मिश्र जी कई पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं। उन्हें प्राप्त पुरस्कार इस प्रकार हैं -

1. 'लाल पीली जमीन' - श्रेष्ठ लेखन के लिए आर्थस गिल्ड ऑफ इंडिया द्‌वारा सम्मानित।
2. 'हुजुर दरबार' - उत्तर प्रदेश हिंदी प्रतिष्ठान द्‌वारा प्रेमचंद पुरस्कार से सम्मानित।
3. 'धीर समीरे' - भारतीय भाषा परिषद कलकत्ता द्‌वारा सम्मानित।
4. 'पाँच आँगनों वाला घर' उपन्यास को के.के.बिडला फाउंडेशन के 1998 के व्यास सम्मान ने सम्मानित।
5. केंब्रिज विश्वविद्‌यालय में अपनी कहानी का पाठ पढ़ा।
6. त्रिनिडाड और टोबैको में आंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि के रूप में शामिल।
7. मॉरिशस की हिंदी प्रचारिणी सभा की स्वर्णजयंती में भारत का प्रतिनिधित्व।
8. 'हुजुर दरबार' मुंबई विश्वविद्‌यालय के लिए और 'तुम्हारी रोशनी' उपन्यास एस.एन.डी.टी. विश्वविद्‌यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित है।
9. गोविन्द मिश्र लिखित उपन्यास 'पाँच आँगनों वाला घर' शिवाजी विश्वविद्‌यालय के पाठ्यक्रम में निर्धारित किया है।

❑ निष्कर्ष -

संवेदनशील कहानीकार होने के साथ-साथ मिश्र जी उपन्यास साहित्य में भी अपने अनुभवों को और अपने परिवेश की वास्तविकता को चित्रित करने में वे सफल ही नहीं बल्कि उच्चता की चरमकोटी तक ले गए हैं।

मिश्र जी का बचपन तो अभाव में ही बीता है। पारिवारिक दारूण स्थिति से जूझते हुए उन्होंने अपने जीवन का सफर आसान बनाने के लिए कई तरह की कठिनाइयों

का सामना किया। उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के अंतरी गांव में जन्मे मिश्र जी को धान, धूल, धौंस धक्का वाली जमीन के परिवेश से गुजरना पड़ा। जिसका गहरा प्रभाव उनके मन पर पड़ा और आगे चलकर उनके उपन्यास साहित्य का विषय बना। बांदा में रहते हुए उनका किशोर मन खिलने लगा था कि तुफान ने आकर खिलते हुए फूल को उखाड़कर फेंक दिया। पहले प्रेम की असफलता ने संवेदनशील मिश्र जी के हाथों न जाने कितनी इस तरह की संवेदनाओं को चिरंतन बनाए रखा। एक के बाद एक मौलिक कलाकृतियों का निर्माण होता गया। अपनी हर-रोज की दिनचर्या में उच्चपदस्थ में व्यस्त होने के बावजूद भी उन्होंने बड़े पैमाने पर मौलिक साहित्य का निर्माण किया है। मनुष्य जीवन की घोर वास्तविकता को, गहरी संवेदनाओं को मिश्र जी सहज सुंदर अभिव्यक्ति में प्रकट करते हैं। किसी प्रशासनिक पद के स्थान पर होने के बावजूद भी इस तरह की साहित्य रचना का निर्माण करना कोई आसान बात नहीं है। फिर भी नई-नई साहित्य कृतियों का निर्माण वे करते हैं तो हम यह सोचने लगते हैं। क्या उन्हीं के हाथों से निर्मित यह कलाकृति है। इस के प्रति वे कहते हैं कि, अपनी आम दिनचर्या में वापिस रूटिन में बहते रहना रोज-बरोज कितना सुविधाजनक है। पागलपन ही है जो लिखता है किसी से?

मिश्र जी सच्चे साहित्यकार, कवि, पदाधिकारी, अध्यापक और अपने परिवार के प्रति आस्था रखनेवाले, तथा समाज की पोल खोलनेवाले प्रतिभासंपन्न और सच्चे प्रेमी तथा देश के सचेत नागरिक हैं।

❑❑❑❑

संदर्भ

क्र.	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम	पृष्ठ सं.
1	सं.डॉ.उर्मिला शिरीष	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	10
2	सं.डॉ.उर्मिला शिरीष	सृजन यात्रा: गोविन्द मिश्र	12
3	- वही -	- वही -	10
4	- वही -	- वही -	25
5	- वही -	- वही - मेरी रचना प्रक्रिया	25
6	- वही -	- वही - जीवन परिचय	12
7	- वही -	सृजन यात्रा : गोविन्द मिश्र	12
8	- वही -	- वही -	12
9	- वही -	- वही -	12
10	- वही -	- वही -	13
11	शैलेश मटियानी	कहानी लिखने का सिद्धांत और गोविन्द मिश्र की कहानियाँ	50